विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

क्या ईरान दूसरा वियतनाम बनेगा?

28 फरवरी 2026 को इज़राइल और अमेरिका ने अचानक ईरान पर आक्रमण कर दिया। प्रारंभ में ऐसा लगता था कि यह युद्ध दो-चार दिन में समाप्त हो जाएगा और ईरान समर्पण कर देगा, किंतु 37 दिन के बाद भी युद्ध की तीव्रता में कोई कमी नहीं आई है। ईरान लगातार अमेरिकी सैन्य ठिकानों और इज़रायल पर मिसाइलें दाग रहा है। अमेरिका के लगभग 15 सैनिक मारे गए हैं और 500 के लगभग घायल हुए हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा प्रतिदिन विरोधाभासी बयान दिए जा रहे हैं। कभी वह स्वयं को विजेता घोषित करते हुए युद्ध विराम की बात करते हैं तो कभी ईरान को पाषाण युग में पहुंचाने की धमकी देते हैं।

हाल ही में अमेरिका के तीन फाइटर जेट विमान, ईरान ने मार गिराए। एक विमान का मलबा गिरने पर अमेरिका ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाकर जैसे-तैसे उसके दोनों पायलटो को बचा लिया। अमेरिका द्वारा हॉर्मूज स्ट्रेट को खोलने के लिए दिया गया 10 दिन का अल्टीमेटम मंगलवार को समाप्त हो रहा है। उसके बाद, किस प्रकार का हमला पुन: किया जाता है, यह देखना होगा। यह तो स्पष्ट हो ही चुका है कि ईरान हार मानने वाला नहीं है और बराबरी का मुकाबला लगातार अमेरिका से कर रहा है। यही नहीं, अब तो उसने इजरायल के सुरक्षा कवच को भेदते हुए उसके कई ठिकानों पर ताबड़तोड़ बमबारी भी की है, जिससे उसे बहुत क्षति पहुंची है। इजरायल-अमेरिका और ईरान के युद्ध को देखते हुए तो ऐसा लगने लगा है कि कहीं इस युद्ध का भी हश्र अमेरिका-वियतनाम युद्ध जैसा तो नहीं होगा? यह उल्लेखनीय है कि अमेरिका-वियतनाम का संघर्ष 1955 से 1975 तक यानि लगभग 20 वर्ष तक चला और अंतत: अमेरिका को खाली हाथ अपने सैनिकों को वापस बुलाना पड़ा। इस अवधि में जहां लाखों वियतनामियों की जान गई वहीं 60000 अमेरिकी सैनिकों की भी मृत्यु हुई।

ईरान पर हमला करने का अमरीकी बहाना, ईरान को परमाणु बम बनाने से रोकना और वहां पर सत्ता परिवर्तन करके अपनी पसंद के लोगों को सत्ता में बिठाना था। यही गलती अमेरिका ने वियतनाम युद्ध के समय भी की थी। हाल ही में जब हम वियतनाम गए, तो वहां हमें बताया गया कि अमेरिका की सबसे बड़ी गलती यह थी कि उसने यह मान लिया कि उसकी लड़ाई वियतनाम की सेना से है। वह भूल गया कि वास्तव में अमेरिका की लड़ाई वियतनाम के लोगों के खिलाफ थी।

लगभग वैसी ही स्थिति इस युद्ध में ईरान की है। ईरान की अधिकांश आबादी पूरी मजबूती के साथ वहां के शासको के साथ खड़ी हुई है और किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। इसके विपरीत, अमेरिका के बहुसंख्यक लोग ट्रंप के युद्ध के इस निर्णय के साथ खड़े हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं। ट्रम्प का विरोध लगातार अमेरिका के प्रत्येक राज्य में बढ़ता जा रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार ट्रंप के युद्ध के निर्णय के साथ 35 प्रतिशत लोग हैं और 65 प्रतिशत लोग उससे असहमत हैं। यह सर्वमान्य तथ्य है कि जब तक देश की सारी जनता सरकार के पीछे नहीं खड़ी हो, तब तक किसी भी युद्ध में अधिक समय तक टिके रहना सरल नहीं है, चाहे आपके पास कितनी भी अधिक सैन्य शक्ति क्यों न हो। इस समय, ईरान को परोक्ष रूप से रूस और चीन का समर्थन मिल रहा है, किंतु ईरान की स्वयं की भी जबरदस्त सैन्य शक्ति का प्रदर्शन इस युद्ध में हुआ है। ऐसा विरला ही देखने में आता है कि किसी देश के सर्वोच्च नेता एवं उसके साथ 40 प्रतिशत बड़े नेताओं और सैन्य अधिकारियों को युद्ध के प्रारंभ में ही मार दिए जाने के बाद भी देश के मनोबल में कोई अंतर नहीं आए। ऐसा ही ईरान के साथ हुआ है। यही नहीं, वह उतनी ही तीव्रता के साथ में अमेरिका के खाड़ी देशों में स्थित सैन्य ठिकानों पर मिसाइलें दाग कर उन्हें नष्ट करने का में लगा हुआ है। ईरान द्वारा इजरायल में भी कई महत्वपूर्ण इमारतों पर बमबारी की गई है जिसमें अनेक नागरिक हताहत हुए हैं।

इस समय, अमेरिका की ऐसी स्थिति सांप-छछूंदर वाली हो गई है। वह न आगे बढ़ सकता है न पीछे जा सकता है। अब वह इस स्थिति से उबरने का बहाना ढूंढ रहा है। पहले अमेरिका ने हॉर्मूज जल डमरूमध्य पर कब्जा करने की बात कही थी, किंतु इस बारे में वह कुछ कर नहीं पाया और निरंतर इस पर ईरान का अधिकार बना हुआ है। वह जिसे देश को चाहे, उसके तेल वाहक जहाजों को जाने दे रहा है और जिसे नहीं चाहता उसे रोक रहा है। हॉर्मूज स्ट्रेट बंद होने से अमेरिका में गैस की कीमतें लगभग 30 प्रतिशत बढ़ गई हैं। गैस के दाम 3 डॉलर प्रति गैलन से बढ़कर 4 डॉलर से अधिक हो गए हैं। इसके कारण अमीरीकी लोगों में काफी गुस्सा है। अमेरिका को NATO देशों का जो साथ मिलना अपेक्षित था, वह नहीं मिल रहा है। अमेरिकी लोग यहां तक कहने लगे हैं कि इस युद्ध में इजराइल का साथ देकर अमेरिका ने बहुत बड़ी गलती की है। ईरान के बंकरों में जो मिसाइलें रखी हुई हैं, उनको जो नुकसान हुआ उसे ठीक कर लिया गया है। यह इससे भी स्पष्ट होता है कि ईरान के हमले में कोई कमी नहीं आई है।

ईरान की अधिकांश आबादी पूरी मजबूती के साथ वहां के शासको के साथ खड़ी हुई है और किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। इसके विपरीत, अमेरिका के बहुसंख्यक लोग ट्रंप के युद्ध के इस निर्णय के साथ खड़े हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं। ट्रम्प का विरोध लगातार अमेरिका के प्रत्येक राज्य में बढ़ता जा रहा है। ईरान द्वारा सभी खाड़ी देशों को कहा जा रहा है कि उन्होंने अमेरिका को अपने यहां सैन्य ठिकाने बनाने की अनुमति देकर गलत काम किया है।

इस बीच इज़राइल ने लेबनान में भी बहुत नुकसान पहुंचाया है। वहां कई नागरिक मारे गए हैं। ऐसा लगता है कि अमेरिका और इसराइल ने ईरान के निवासियों को तबाह करने का निर्णय ले रखा है। इजरायल-अमेरिका की लड़ाई अब केवल ईरान के विरुद्ध लड़ाई नहीं रह गई है, बल्कि कई लोग इसे मानवता के विरुद्ध लड़ाई मान रहे हैं। सोशल मीडिया पर निर्दोष नागरिकों विशेषकर महिलाओं और बच्चों के मारे जाने के वीडियो प्रसारित हो रहे हैं। ईरान अब यह कह रहा है कि वह युद्ध को तभी रोकेगा जब अमेरिका में सत्ता परिवर्तन हो जाएगा। यह उल्लेखनीय कि अमेरिका ने ईरान में सत्ता परिवर्तन के उद्देश्य से उस पर आक्रमण किया था लेकिन अब स्थिति ठीक उलट होती दिखाई दे रही है। ट्रंप ने बौखलाहट में सेना के मुखिया और अटॉर्नी जनरल को हटा दिया है। एफबीआई के मुखिया काश पटेल को हटाने की भी खबरें आ रही हैं।

विश्व का जनमत भी धीरे-धीरे अमेरिका के विरुद्ध होता जा रहा है। निर्दोष, निरपराध ईरान और लेबनान के लोगों पर जिस प्रकार का कहर बरपाया जा रहा है, उसे किसी भी दृष्टि से न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र संघ तो पहले ही अपनी प्रासंगिकता वर्तमान समय में खो चुके हैं। ट्रंप के राष्ट्रपति रहते हुए वैसे भी, किसी कानून, नियम आदि की मर्यादा का पालन करने की अपेक्षा करना ही बेकार है।

ईरान द्वारा सभी खाड़ी देशों को कहा जा रहा है कि उन्होंने अमेरिका को अपने यहां सैन्य ठिकाने बनाने की अनुमति देकर गलत काम किया है। जिस प्रकार से संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, बहरीन, ओमान आदि देशों ने अमेरिका का साथ दिया और उसे सैन्य ठिकाने अपने यहां बनाने दिए, उसकी कीमत वे अब चुका रहे हैं। ईरान इन देशों को इस्लाम विरोधी भी सिद्ध करने में लगा हुआ है।

आने वाले समय में अमेरिकी, इजरायली और यहां तक कि उनके समर्थन में आए देशों के नागरिक ईरान का निशाना बन सकते हैं। अमेरिकी दूतावासों एवं वहां की बड़ी-बड़ी कंपनियों की इमारतों पर भी हमले होने की आशंका बनी रहेगी। कुल मिलाकर, विश्व आतंक के साए में रहेगा। जितना लंबा यह युद्ध चलेगा उतनी ही अमेरिका के लिए स्थिति विकट होती चली जाएगी। हो सकता है, यह वियतनाम युद्ध की तरह भले ही 20 वर्षों तक न चले किंतु तब भी इतना नुकसान तो दोनों पक्षों को हो ही चुका होगा जिसकी भरपाई आने वाले कई सालों तक नहीं हो पाएगी।

अमेरिका के मध्यावधि चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के हारने की आशंका है। इसके बाद यह भी संभव है कि रिपब्लिकन पार्टी के अंदर से ही ट्रंप को राष्ट्रपति पद से हटाने की आवाज़ उठे। ट्रंप की बड़ी गलती यह हुई कि उसने देश को चलाने में और कंपनी को चलाने में अंतर करना नहीं समझा। वह एक सफल उद्योगपति और व्यवसायी अवश्य रहा होगा किंतु अमेरिका जैसे महत्वपूर्ण बड़े राष्ट्र के राष्ट्रपति के रूप में उसका चुना जाना विश्व की पूरी राजनीति के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न करने वाला सिद्ध हो रहा है। यह देखना दिलचस्प होगा कि कैसे अमेरिका वर्तमान स्थिति से बाहर निकलता है और कैसे इस युद्ध पर विराम लगता है? युद्ध बंद होने के बाद भी ईरान की ओर से अमेरिका इज़राइल पर आक्रमण कम होंगे, इसकी संभावना कम है।

इज़रायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू भी पिछले चुनाव में सत्ता से बाहर होते-होते बचे थे। उनके विरुद्ध, देश में बहुत बड़े स्तर पर प्रदर्शन हुए थे, किंतु संघर्ष के समय इजरायल के नागरिक, नेताओं से नाराजगी के बावजूद प्रधानमंत्री के निर्णय का विरोध नहीं कर रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे नेतन्याहू के समर्थक बन चुके हैं।

इस युद्ध के कारण भारत में भी गैस सिलेंडर और तेल की कमी दिखाई देने लगी है। गैस सिलेंडर की कीमत 3000 तक पहुंच गई है। ऊर्जा की कमी के कारण कई कल कारखाने भी बंद हो गए हैं। मजदूर बेरोजगार हो गए हैं जिसके कारण वे उत्तर प्रदेश और बिहार की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रही तो हजारों-लाखों लोगों के समक्ष जीवन यापन का भी संकट उत्पन्न हो जाएगा।

भारत को प्रारंभ से नैतिकता के आधार पर अमेरिकी हमले का विरोध करना चाहिए था जो उसने नहीं किया। अमेरिका द्वारा ईरान पर हमला उसके आंतरिक मामलों में दखल ही था। भारत जैसे बड़े प्रजातांत्रिक देश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सच का साथ दे, किंतु भारत ने अमेरिका को नाराज़ न करने के लिए चुप्पी साध ली। यहां तक कि ईरान के सुप्रीम नेता और 40 अन्य की हत्या की भी निंदा नहीं की।

जब वियतनाम जैसा छोटा देश 20 वर्षों तक अमेरिका से संघर्ष करके, उसे अंतत: वहां से वापस लौटने के लिए मजबूर कर सकता है तो फिर ईरान जैसे देश को हराना सरल नहीं है।

वियतनाम युद्ध समाप्त होने के 50 सालों बाद भी वहां की पीढ़ियां अभी तक युद्ध के दुष्परिणाम भुगत रही हैं। यही हाल जापान के हिरोशिमा और नागासाकी के लोगों का हुआ जिन पर अमेरिका ने 1945 में परमाणु बम गिराया था। दोनों पक्षों को सद्बुद्धि आए और वे यह संघर्ष बंद करें, इसकी हम कामना ही कर सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

सार्वभौमिक स्वास्थ्य की दिशा में राजस्थान का समग्र संकल्प

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2026....

गजेंद्र सिंह खींवसर

विश्वभर में हर वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि स्वास्थ्य मात्र व्यक्तिगत विषय नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नीतिगत प्राथमिकताओं का केंद्र है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित इस वर्ष की थीम सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लिए वैश्विक कार्रवाई आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह थीम हमें एक ऐसी व्यवस्था विकसित करने के लिए प्रेरित करती है, जहां प्रत्येक नागरिक को बिना आर्थिक बोझ के गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हों।

राजस्थान जैसे विशाल, भौगोलिक रूप से विविध और सामाजिक रूप से बहुस्तरीय राज्य में सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण, लेकिन संभव लक्ष्य है। मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में हमारी सरकार ने इस दिशा में स्वास्थ्य को केवल चिकित्सा सेवाओं तक सीमित न रखकर उसे जीवनशैली, पर्यावरण, ऊर्जा, पोषण और सामाजिक सुरक्षा से जोड़ते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया है। सार्वभौमिक स्वास्थ्य की अवधारणा के अनुसार स्वास्थ्य सेवाएं केवल अस्पतालों और दवाइयों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। स्वच्छ जल, पोषणयुक्त आहार, सुरक्षित कार्य वातावरण और प्रदूषण मुक्त जीवन से ही पूर्णत: स्वस्थ रहा जा सकती है।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य ने स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के साथ-साथ उन आधारभूत कारकों पर भी विशेष ध्यान दिया है, जो सीधे तौर पर जनस्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराने की पहल इसी सोच का उत्कृष्ट उदाहरण है। पूर्व में किसानों को रात्रि के समय सिंचाई करने के लिए बाध्य होना पड़ता था। अंधेरे में खेतों में काम करना, जहरीले जीवों का खतरा, अत्यधिक ठंड या वर्षा के बीच कार्य उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थीं। अब 24 जिलों में दिन के समय बिजली उपलब्ध कराए जाने से न केवल कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है, बल्कि किसानों की जीवन गुणवत्ता और स्वास्थ्य में भी सकारात्मक परिवर्तन आया है। वर्ष 2027 तक सभी जिलों में इस सुविधा का विस्तार किया जाना प्रस्तावित है।

स्वास्थ्य की बात करते समय स्थानीय परिस्थितियों और जीवन की गुणवत्ता को भी उतना ही महत्व देना होगा। सुरक्षित कार्य वातावरण स्वयं में एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा है। स्वच्छ और सतत ऊर्जा की दिशा में राजस्थान का बढ़ता कदम भी स्वास्थ्य सुरक्षा से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री कुसुम योजना के माध्यम से राज्य में सौर ऊर्जा उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। लगभग 1961 मेगावाट क्षमता के सौर संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं, जिससे राजस्थान देश में हरित ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनकर उभरा है। इसका सीधा प्रभाव पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। थर्मल ऊर्जा पर निर्भरता कम होने से वायु प्रदूषण में कमी आई है, जिससे श्वसन संबंधी रोगों के जोखिम में गिरावट आई है। कार्बन उत्सर्जन में कमी जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को नियंत्रित करने में सहायक है, जो भविष्य में स्वास्थ्य संकटों को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रकार, ऊर्जा क्षेत्र में सुधार भी स्वास्थ्य सुरक्षा का एक सशक्त माध्यम बन गया है।

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में हमारी सरकार ने चिकित्सा सेवाओं को सुलभ, सस्ती और प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। नि:शुल्क दवा और जांच योजनाओं के माध्यम से आमजन को आर्थिक राहत प्रदान की गई है। स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के विस्तार से गंभीर बीमारियों के उपचार का बोझ कम हुआ है। डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों में भी चिकित्सा सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित की जा रही है। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार हुए हैं। संस्थागत प्रसव को बढ़ावा, पोषण कार्यक्रमों का विस्तार और टीकाकरण अभियान की सुदृढ़ व्यवस्था ने मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वास्थ्य केवल सरकारी योजनाओं से ही सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इसके लिए जनभागीदारी और जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक है। स्वस्थ जीवनशैली अपनाना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, योग, स्वच्छता और मानसिक संतुलन अच्छे स्वास्थ्य के आधार हैं। राजस्थान में आयुष पद्धतियों योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे आमजन की दवाइयों पर निर्भरता कम होगी और प्राकृतिक व संतुलित जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। यह दृष्टिकोण रोगों की रोकथाम में भी अत्यंत प्रभावी है।

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का एक महत्वपूर्ण पहलू आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा भी है। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति अपने स्वास्थ्य पर बेहतर ध्यान दे पाता है। किसानों को ऊर्जा के माध्यम से सशक्त बनाना, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाना और जीवन स्तर में सुधार करना अप्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा के अनुसार स्वास्थ्य मात्र बीमारी का अभाव नहीं, बल्कि एक समग्र शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की अवस्था है। इसी सिद्धांत को आधार बनाकर राज्य सरकार स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का लक्ष्य एक ऐसे राजस्थान का निर्माण करना है, जहां प्रत्येक नागरिक स्वस्थ, सुरक्षित और सशक्त हो। जहां किसान उजाले में आत्मविश्वास के साथ कार्य करे, जहां स्वच्छ ऊर्जा से पर्यावरण सुरक्षित हो और जहां स्वास्थ्य सेवाएं हर व्यक्ति तक समान रूप से पहुंचें। इसी समग्र दृष्टिकोण के साथ राजस्थान सबके लिए स्वास्थ्य के लक्ष्य की ओर दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

–गजेंद्र सिंह खींवसर,
स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान

कभी फ़रियाद न करने वाले गधे पालिये, उनके गुणों को सराहिये और राजनीत में सक्रिय रहिये

प्रो. वीर बहादुर सिंह

गधा नाम सुनते ही बहुधा लोग नाक मुंह सिकोड़ने लगते हैं ऐसा भाव शायद घृणावस और गधों के अमूल्य मानव हितकारी गुणों की अनभिग्यता होने के कारण। लेखक स्वयं पशुपालन और डेरी का छात्र रहा है इसलिए मेरा नजरिया सभी पशुओं को वैज्ञानिक तरीके से देखने और प्रत्येक के महत्व व् कार्य को मानव हित में परखने की दृष्टि ही सर्वोपर रहती है और अभी भी है। पाठकगण यह न समझें कि मैं किसी को गधा समझनें की कोई भूल कर रहा हूँ। ऐसा विचार कृपया अपने दिमाग में मत लाइए, ऐसी गुश्ताख़ी भला मैं कैसे कर सकता हूँ ? सबको सम्मान देने व् लेने का ही पक्षधर हूँ। वो अलग बात है कि हमारे अग्रज और शुभचिंतक बहुधा कभी कभी हमें ;गधा; कह देते हैं।

मैनें अपने प्रोफेशनल काल में श्री कृशन चन्दर लिखित इस सन्दर्भ में प्रकाशित दो पुस्तकें पढ़ी थी। एक का शीर्षक था :– 'एक गधे की आत्मकथा' और दूसरी का; 'गधे की वापिसी'। ये संधर्व देने का लेखक का मकसद क्या है यह पाठकगण विचार करते रहें। मेरा उद्देश्य तो केवल यह बताना है कि कुछ विचारशील और प्रकृति प्रेमीजनों ने गधों पर काफी पहले उपन्यास तक लिखे हैं। लेकिन यह विचार भी कभी न आये कि मैं उन्हें गधा समझता हूँ। और यदि वे हैं तो मुझे क्या आपत्ति, वे बने रहें। क्योंकि आगे लोग पढ़ेंगे कि गधे में अपने मालिक के हित में अगाध परिश्रम और सहनशीलता तो है ही, के अलावा अनेक गुण भी होते हैं। मनुष्यों में प्रेजिडेंट ट्रंफ अकेले ऐसे शक्तिमान व्यक्ति हैं जो अनेक गुणों से परिपूर्ण हैं वे बिना किसी भयंकर कारण के किसी भी राष्ट्र को हड़का सकते हैं, उसके व्यापार करने पर बंदिश लगा सकते हैं और अपना उद्देश्य पूर्ण न होने की हालत में राष्ट्रों को आपस में लड़ा सकते हैं, भीषण युद्ध करवा सकते हैं, सैंक्शन लगाकर समूचे राष्ट्र की बधिया बिठा सकते हैं वे सर्वशक्तिशाली प्रतीत होते हैं। अनेक गुण संपन्न प्रेजिडेंट ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में बिना किसी बात के पश्चिमी एशिया में बृहत पैमाने पर खतरनाक युद्ध छिड़वा दिया है। तो मैनें देखा कतिपय बुद्धिजीविओं ने मीडिया पर उन्हें पागल राष्ट्रपति और गधा करार तक दे दिया,जो आंकलन में उचित नहीं बैठता, फिर भी यह उनकी अमेरिकन प्रजा का मामला है उस पर दूसरा कोई अन्यथा टिप्पड़ी कैसे कर सकता है ? प्रेजिडेंट ट्रम्प से मुझे कोई लेना-देना नहीं। मैं तो इसी से प्रसन्न हूँ कि हमारे देश के मोदी जी ने उन्हें एहसास करा दिया कि डिअर हम कायर नहीं हैं पहले भी नहीं थे, मुकाल्ते में मत रहिये प्रसिडेंट ट्रंप साहब, सब समय का खेल है। समय बड़ा बलवान होता है किसी भी शहंशाह का ताज सदैव शिखर पर नहीं रहने देता। भारतीय पौराणिक दृष्टांत इसके साक्षी हैं।

ऊँची वैचारिक परम्पराओं ने जब गधों पर उन्यास लिखवा दिए तो प्रसिडेंट्स साहब काल चक्र काफी घूम गया है। भारत के केस में यह अलग बात है कि भारतीय राजनीति में अब कुछ गधे और गधैयाँ उत्पन्न हो गए हैं। इसलिए आगे देखिये भविष्य में इनकी जनसँख्या कितनी और कैसे बढ़ती है, और फिर चुनाव से लेकर सम्पूर्ण देश की राजनीत कैसे बनते बिगड़ते स्थायुत्व को प्राप्त होती है अथवा नहीं?

प्रकृति में एक नियम और भी है कि जो जितनी जल्दी बढ़ता है वह उतनी ही जल्दी मिट जाता है। समझदार को इशारा काफी है। अरे, मैं फिर भटक गया प्रतीत होता हूँ। ख़ैर क्षमा करें। बात तो गधों की हो रही है। अब आगे बात करते हैं कि भारत में बढ़िया उत्कृष्ट नस्ल के गधे गुजरात के कच्छ प्रान्त में मिलते हैं। अन्य प्रांतों के अलावा तमिलनाडु, राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और अन्यंत्र भी गधे पाले जाते हैं। गधों की उपयोगिता भी कम नहीं है आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग और ईंट भट्टों तथा भवनों के निर्माण में सामग्री ढोनें में गधे खूब काम में लिए जाते हैं। घनी आबादी और पुराने शहर की सकरी गलिओं में जहाँ अन्य कोई वाहन निर्माण सामग्री ढोनें में सक्षम नहीं, गधे ही सामग्री और मलवे को धीरे-धीरे यथा स्थान पहुंचाने में सफल होते हैं।

लेखक ने अपने एक सम्पादकीय में चेन्नई में गधी के दूध की महत्वता के बारे में लिखा था। वहां एक शिशु अस्पताल के निकट कुछ दिन पूर्व ही ब्याई गधाइआं प्रतिदिन लाई जाती हैं जिनका दूध दो सौ-तीन सौ रुपये प्रति सौ ग्राम कीमत पर उन नवजात शिशुओं को डॉक्टर की सलाह पर पिलाया जाता है जिन्हे अपने माँ का और गाय आदि का दूध अनुकूल नहीं पड़ता। इस प्रतिकूलता के लिए एक से अधिक कारण गिनाये जा सकते हैं। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि गधी का दूध पोषण, पोषक तत्वों की मात्रा और शिशु पाचन तंत्र में उसकी अनुकूलता की दृष्टि से किसी भी बात में नीचे नहीं होता। संभवत: गधे को उसके स्वभाव के कारण निम्न और निकृष्ट करार दे दिया गया जो उसके साथ मानव की घोर वेइन्साफ़ी है। लेखक की अनुसंशा है कि अन्य पशुओं, पक्षिओं, को प्रेम करने वाले और संरक्षण देने वाले संस्थान गधे के प्रति सहनशील बने ताकि गधों की घटती संख्या को रोका जा सके। लेखक ने कुछ वर्ष पूर्व गीताप्रेस के कल्याण मासिक पत्रिका में ;देसी गायों की घटती संख्या के लिए उत्तरदायी कौन; पर लेख लिखा था।

उसी प्रकार गधों को उनकी उपयोगिता और महत्व को देखते हुए उन्हें उचित सम्मान मिले जो सर्वदा वांछनीय है, यह लेख समर्पित है। आखिर में लेखक की प्रार्थना है कि सामजिक दृष्टि से किसी को गधा न कहें भले ही वह कार्य और व्यवहार में मूर्ख और गधा सदृश्य प्रतीत होता हो। चलते-चलते यह कह दूँ कि लोग विधायका और संसद के माननिओं को उचित सम्बोधन से ही आदर सम्मान दें अन्यथा नहीं।

-प्रो. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व अधिष्ठाता, डेरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

रेलवे ने 2025-26 में रेलवे सुरक्षा बल के माध्यम से अभियान चलाया

जोधपुर, (कासं)। ट्रेनों में बिना कारण चेन पुलिंग करने वाले यात्रियों के खिलाफ रेलवे ने सख्त रुख अपनाते हुए वित्तीय वर्ष 2025-26 में रेलवे सुरक्षा बल के माध्यम से व्यापक अभियान चलाते हुए 725 लोगों को गिरफ्तार कर उनसे 2.81 लाख का जुर्माना वसूल किया है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि मंडल के वाणिज्य विभाग और रेलवे सुरक्षा बल के संयुक्त विशेष अभियान के तहत 744 मामले दर्ज किए गए। इनमें से 709 मामलों का निपटारा किया जा चुका है, जबकि 33 मामले अभी जांचाधीन हैं और 2 मामलों में एफआर दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि वाणिज्य विभाग और रेलवे सुरक्षा बल की संयुक्त टीमों द्वारा ट्रेनों, प्रमुख स्टेशनों और संवेदनशील रेलखंडों पर विशेष निगरानी रखी गई, जिससे संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत कार्रवाई संभव हो सकी। कई आरोपियों को मौके पर ही पकड़ा गया, जबकि कुछ को बाद में पहचान कर गिरफ्तार किया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि बिना वजह चेन पुलिंग करना रेलवे अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध है। इससे न केवल ट्रेन संचालन बाधित होता है, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा भी खतरे में पड़ती है। अचानक ट्रेन रुकने से पीछे आने वाली कई ट्रेनों की आवाजाही प्रभावित होती है, जिससे हजारों यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ती है।

रेलवे ने स्पष्ट किया है कि 'जीरो टॉलरेंस' नीति आगे भी जारी रहेगी और नियम तोड़ने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। अभियान के दौरान टिकट चेकिंग स्टाफ ने यात्रियों को जागरूक करने में अहम भूमिका निभाई, वहीं आरपीएफ ने गश्त और विशेष ड्राइव के जरिए सख्ती बरती। इसके साथ ही रेलवे ने घोषणाओं, पोस्टर और अन्य माध्यमों से भी यात्रियों को नियमों के प्रति सचेत किया। इसके अतिरिक्त टिकट चेकिंग स्टाफ को भी ट्रेनों में अनावश्यक चेन पुलिंग करने वाले यात्रियों पर कड़ी नजर रखने के लिए निर्देशित किया गया है।

राशिफल मंगलवार 7 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2083, ज्येष्ठा नक्षत्र बुधवार प्रात: 5:54 तक, व्यतिपात योग सायं 4:16 तक, तैतिल करण सायं 4:35 तक, चन्द्रमा बुधवार प्रात: 5:54 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज व्यतिपात पुण्यं है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:22 से 10:56 तक, लाभ-अमृत 10:56 से 2:02 तक, शुभ 3:36 से 5:09 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:43

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कारणों से मानसिक तनाव रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मिथुन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं, स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद हो सकते हैं।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक र